Shri Shankaracharya
Institute of Professional Studies
Managed by Shri Ganagajali Education Society
Old Dhamatari Road, Sejbahar, Raipur, Chhattisgarh, India 492015
Phone: 0771-2772989, Email: raipurssips@gmail.com

Session 2025-26

9.2.1 Number of publications in peer reviewed journals listed in SCOPUS/WOS/UGC Care and in indexed conference proceedings(external) /book chapters (external)

Research Paper Publications

Sl. No	Title of paper	Name of the author/s	Department of the teacher	Name of journal	Calendar Year of publication	ISSN number	Link to the recognition in UGC enlistment of the Journal /Digital Object Identifier (doi) number		
							Link to website of the Journal	Link to article / paper / abstract of the article	Is it listed in UGC Care list
1	21vi sadi ke hindi baal sahitya me badlte samjik sarokar	Dr. Aparajita Joy Nandi	Humanities (Hindi)	JRJoE	2025	2454-6070	https://www.mearf.info/mearfjournaljrjoe	https://doi.org/10.5281/zenedo.18439347	Peer Reviewed
2	Gender, Caste & Other Subaltern prospectives reflected in PannalalPatel's Gujrati Novel 'Malela Jeev"	Ms. Jalpa Soni	Commerce	International journal of multidinary research	2025	3107-3786	www. researchvibes.in	https://researchvibes.in/media/papers/02_04_01_2025.pdf	Peer Reviewed
3	Exploring the Effect of Parental Pressure and Gender in Shaping Educational Adjustment in School Students	Ms. Kamna Awashti	Management	Periodic Research	2025	2349-9435	https://socialresearchfoundation.com/researchtimes_pre.php?pubmonth=8&year=2025	https://socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=11416	Peer Reviewed
4	Evaluating Various Methods for Solving Third-Order Ordinary Differential Equations	Ms. S Joshna	Mathematics	International Journal of Environmental Sciences	2025	2229-7359	https://theaspd.com/	https://theaspd.com/index.php/ijes/article/view/6583	Scopus
5	Applications of Laplace transform in third and fourth order differential equation	Ms. S Joshna	Mathematics	International Journal of Statistics and Applied Mathematics	2025	2456-1452	https://www.mathsjournal.com/	https://www.mathsjournal.com/pdf/2025/vol10issue2/PartB/10-2-11-647.pdf	Peer Reviewed

Book Chapters

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	National / International	Calendar Year of publication	ISBN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication	Name of the publisher
1	किरण बेदी: महिला सशक्तिकरण की मिसाल और आधारभूत स्तंभ	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-93-49496-77-4	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	J.T.S Publication
2	विश्वनाथ प्रताप सिंह: राजा मंडू से जननेता बनने तक का सफरनामा	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-93-49496-52-1	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	J.T.S Publication
3	भारतीय दलित महिला लेखिकाओं का साहित्यिक योगदान	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-93-49496-52-1	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	J.T.S Publication
4	भारतीय प्रशासन में महिलाओं की भागीदारी: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-93-48110-06-0	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	J.T.S Publication
5	"दलित साहित्य और विमर्श: अस्मिता, समानता और न्याय की खोज"	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-81-993237-0-4	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	Kolkata Press Books
6	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९६८: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, प्रभाव और भारत की शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता"	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-93-7419- 581-9	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	sahitya gram prakashan
7	हिंदी दलित साहित्य में स्त्री केन्द्रित लेखन और आत्मनिर्भरता	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-93-6210- 670-4	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	Prakhar Goonj Publications
8	प्रवासी भारतीय महिला लेखन: हिंदी भाषा का वैश्विक विस्तार	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-93-49496- 21-7	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	J.T.S Publication
9	रम का विज्ञान - दर्शन	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN - 978-93-6355- 001-8	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	prakashak Evincepub Publishing
10	"स्वामी विवेकानन्द - एक युग दृष्टा एवं भारत के नवजागरण के अग्रदूत"	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-81-992816- 1-5	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	A Shivoham Publication House Book Udyam
11	देवानन्द अवस्थी सुपरस्टार की अनूठी पहचान	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN-978-93-49496-33-0	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	J.T.S Publication
12	सुचित्रा सेन के अभिनय जीवन का विविध आयाम	Dr. Aparajita Joy Nandi	National	2025	ISBN- 978-93-49496- 92-7	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	J.T.S Publication
13	Commerce and Economic Thought in Indian Tradition: Trade, Finance, and Sustainable Livelihoods	Duna Jogeswar Rao	National	2025	ISBN 978-93-73528-51-6	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	Agra Book International
14	The role of artificial intelligence and data driven decision making	Onkar kaur	National	2025	ISBN 978-93-48990-74-7	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	lot Academy publishers

15	A study on consumer behaviour of Indians towards Apple iPhones	Dr Abhinav Shrivastava	National	2025	ISBN 978-93-47070-76-1	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	Navyug Books International, Delhi
16	Smart Technologies for Smarter Women Inverstors: AI and Capital Market Inclusion	Ms. Sumera	National	2025	ISBN 978-93-48990-74-7	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	IOT Academy Publishers, Coimbatore, Tamilnadu, India
17	The Role of Emotional Intelligence in Leadership Effectiveness	Ms. Kamna Awasthi	National	2025	ISBN 978-93-5809-194-6	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	IOT Academy Publishers, Coimbatore, Tamilnadu, India
18	Revolution of AI in Modern Commerce	Jalpa Soni	National	2025	ISBN 978-93-48990-94-5	Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur	IOT Academy Publishers, Coimbatore, Tamilnadu, India

Jyotirmay Research Journal of Education : An International Peer Reviewed, Multidisciplinary, Print Research Journal. ISSN : 2454-6070 (IF : 9.125)
"A Quarterly Research Journal of Education, Special Education, Humanities, Science, Social Sciences, Technology, Management & Developmental Education" ***(Volume-11, Issue-22, October-Dec. 2025)***

21वीं सदी के हिंदी बाल साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार

प्राप्त किया गया: 20/12/2025
स्वीकृत किया गया: 22/12/2025
प्रकाशित किया गया: 31/12/2025
पत्राचार ई–मेल:
aparajitajoynandi33@gmail.com

डॉ० अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़
प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर, छत्तीसगढ़ (भारत)

सार :– 21वीं सदी का हिंदी बाल साहित्य भारतीय समाज में घटित तीव्र वैचारिक, सांस्कृतिक और नैतिक परिवर्तनों की पृष्ठभूमि में विकसित होने वाली एक सशक्त, गतिशील और सामाजिक रूप से उत्तरदायी साहित्यिक धारा के रूप में उभरकर सामने आया है। यह साहित्य अब केवल बाल–मनोरंजन या नैतिक उपदेश तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि समाज के व्यापक सरोकारों से गहराई से जुड़ चुका है। समकालीन बाल साहित्य में लैंगिक समता, पर्यावरणीय संकट, डिजिटल नैतिकता, वैज्ञानिक चेतना, बहुसांस्कृतिकता, संवैधानिक मूल्य, मानवाधिकार तथा सामाजिक न्याय जैसे विषयों की सशक्त उपस्थिति दिखाई देती है, जो इसे अपने समय का प्रतिनिधि साहित्य बनाती है। 21वीं सदी का बालक एक बदले हुए सामाजिकदृसांस्कृतिक परिवेश में जीवन व्यतीत कर रहा है। डिजिटल तकनीक, इंटरनेट, दृश्य–श्रव्य माध्यम, वैश्विक संपर्क और वैज्ञानिक सोच ने उसके अनुभव जगत को व्यापक और जटिल बना दिया है। परिणामस्वरूप बाल साहित्य की संरचना, भाषा और विषयवस्तु में भी उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। आधुनिक बाल साहित्य अब बालक को केवल पाठक नहीं, बल्कि एक सक्रिय, जिज्ञासु और तर्कशील व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करता है। समकालीन हिंदी बाल साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वह सामाजिक दायित्व का निर्वहन करता है। यह बच्चों को समाज की वास्तविक संरचनाओं, असमानताओं और मानवीय मूल्यों से परिचित कराता है तथा उनमें संवेदनशीलता, सहभागिता और जिम्मेदारी का भाव विकसित करता है। बाल साहित्य में शोषित, वंचित और हाशिए पर स्थित वर्गों की चेतना को भी स्थान मिलने लगा है, जिससे बच्चों में सहानुभूति और न्याय–बोध का विकास होता है। इस प्रकार 21वीं सदी का हिंदी बाल साहित्य केवल साहित्यिक परिवर्तन का संकेत नहीं देता, बल्कि वह बालक के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास में सहायक एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक माध्यम के रूप में स्थापित होता है। प्रस्तुत शोध–पत्र इसी संदर्भ में 21वीं सदी के हिंदी बाल साहित्य में सामाजिक सरोकारों के परिवर्तित स्वरूप का प्रमाणिक और आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द :– सामाजिक सरोकार, 21वीं सदी, हिंदी बाल साहित्य, बहुसांस्कृतिकता, डिजिटल युग, वैज्ञानिक चेतना।

1. प्रस्तावना:

हिंदी बाल साहित्य का इतिहास भारतीय समाज के वैचारिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास–क्रम से गहराई से संबद्ध रहा है। यह साहित्य कभी भी केवल बच्चों के मनोरंजन का साधन मात्र नहीं रहा, बल्कि प्रत्येक युग में उसने समाज की मूल प्रवृत्तियों, जीवन–मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना को बाल मन के अनुकूल रूप में प्रस्तुत किया है। प्रारंभिक काल में हिंदी बाल साहित्य का प्रमुख उद्देश्य बालकों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक अनुशासन, आज्ञाकारिता तथा संस्कार–प्रधान जीवन–दृष्टि का विकास करना था। पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथाएँ और लोककथाएँ इस परंपरा की सशक्त कड़ियाँ हैं, जिनमें नीति, व्यवहार और सामाजिक मर्यादाओं की शिक्षा कथात्मक और सहज शैली में दी गई। स्वतंत्रोत्तर भारत में बाल साहित्य का स्वरूप अपेक्षाकृत व्यापक और वैचारिक रूप से अधिक सुदृढ़ हुआ। इस कालखंड में बाल साहित्य के माध्यम से राष्ट्रगौरव, भाषा–प्रेम, चरित्र–निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और कल्पना–समृद्धि जैसे तत्वों को विशेष महत्व दिया गया। इस समयावधि में बालक को एक भावी नागरिक के रूप में देखते हुए साहित्य में आदर्शवाद और नैतिक चेतना की प्रधानता रही। किंतु 21वीं सदी में प्रवेश करते ही बाल साहित्य की यह प्रवृत्ति एक महत्वपूर्ण बौद्धिक और वैचारिक परिवर्तन से गुज़री।

Scanned with OKEN Scanner

THE RESEARCH VIBES
International Journal of Multidisciplinary Research
An International, Indexed, Peer-Reviewed, Open Access E-Journal

The
Research Vibes
ISSN: 3107-3786

Certificate of Publication

Certificate ID: TRVIJOMR-250204-01

This is to certify that

Prof. Jalpa Soni

Assistant Professor, Shri Shankaracharya Institute of professional Studies,

has published the research paper titled

"Gender, Caste and other Subaltern perspectives reflected in Pannalal Patel's Gujarati novel, "Malela Jeev."

in The Research Vibes: International Journal of Multidisciplinary Research,

Volume 2, Issue 4, August :2025.

This certificate is awarded in recognition of the author's valuable contribution to academic research and scholarly excellence.

www.researchvibes.in
vibespublication@gmail.com

Editor in Chief
The Research Vibes: IJMR

The Research Vibes: International Journal of Multidisciplinary Research

The Research Vibes

Website: https://researchvibes.in **E-ISSN**: 3107-3786

Volume: 02 | Issue: 04 | August :2025

Gender, Caste and other Subaltern perspectives reflected in Pannalal Patel's Gujarati novel, "Malela Jeev".

***Prof. Jalpa Soni*[1], *Megha Dave*[2]**

[1] Assistant Professor, Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur, India

[2] Undergraduate Student, St. Xavier's College, India

Corresponding Authors Email: jalpasoni@ssipsraipur.in, meghadave2005@gmail.com

Abstract

This paper explores Pannalal Patel's Gujarati novel Malela Jeev through subaltern perspectives, focusing on gender, caste, and class. The tragic love story of Kanji and Jivi exposes how rigid social hierarchies, patriarchal norms, and caste restrictions marginalize individuals, especially women. Drawing on Gramsci's concept of "subaltern classes" and Spivak's "subaltern female," the study highlights Patel's realistic portrayal of rural Gujarat and the struggles of oppressed groups, revealing systemic injustice and challenging hegemonic social order.

Keywords: *Subaltern Studies, Gender, Caste, Class.*

Introduction -

The word 'subaltern' means 'of inferior rank' or status (Gundala). It is originated from Latin word *sub* - ("under") and *alternus* ("every other (one), one after the other"). The term popularized when it was used by Italian Marxist Antonio Gramsci in the article *"Notes on Italian History"* which was published under his book *Prison Notebooks* written between 1929 and 1935 and published in 1947. Subaltern refers to those subordinate group of society who has experienced hegemonic power of the ruling group.

Gramsci has primarily used the term 'subaltern' from political perspective. However, he has also introduced a wider meaning of 'subaltern' by presenting the idea of 'subaltern groups' and 'subaltern classes', which highlights the concept of repression through class, caste, gender, race, language and culture dominated by power, rank or authority. In general, 'subaltern' implies to a person with a low ranking in a social, political, economic or other chain of command and can be ensemble within the representation of the Oppressor/Oppressed (Gundala). Pannalal Patel is a renowned Gujarati writer known for his distinguish and realistic style of writing, which has always reflected 'the inner truth through outer reality' (qtd. in Kikani and Shah).

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.- XIII , ISSUE- IV August - 2025
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

Exploring the Effect of Parental Pressure and Gender in Shaping Educational Adjustment in School Students

Paper Id : 20474 Submission Date : 2025-07-05 Acceptance Date : 2025-07-28 Publication Date : 2025-08-02
This is an open-access research paper/article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.
For verification of this paper, please visit on http://www.socialresearchfoundation.com/researchtimes.php#8



Kamna Awasthi
Assistant Professor
Department Of Education
Shri Shankaracharya Institute Of Professional Studies
Raipur,Chhattisgarh, India



Gaytri Jai Mishra
Associate Professor
Department Of Education
Shri Shankaracharya Mahavidyalaya
Bhilai, Chhattisgarh, India

Abstract

The present study aims to explore the Effect of Parental Pressure and Gender in Shaping Educational Adjustment in high school students. For this purpose 'Parental Pressure Scale made by Suman Kumari and Rama Maikhuri and Educational Adjustment Inventory made by Seema Rani and Basant Bahadur Singh, was administered on 80 male and 80 female students of Durg District. Descriptive (mean and standard deviation) and inferential (2×2 ANOVA) statistical techniques were used to analyze the data. The results showed that parental pressure has a significant effect on the educational adjustment of students. However, there is no significant effect of gender on educational adjustment. A significant interaction effect between parental pressure and gender was found, suggesting that the influence of parental pressure on adjustment varies by gender. Specifically, boys under high parental pressure are more maladjusted compared to girls in similar conditions. Conversely, boys under low parental pressure exhibit better educational adjustment than girls.

Keywords Parental Pressure , Educational Adjustment, Academic environment, School Student.

Introduction

In recent years, educators, clinical psychologists, and psychiatrists have voiced strong criticism of the excessive burden placed on young students by the Indian educational system. Media reports—especially in newspapers and magazines—have repeatedly highlighted the rising incidence of learning and behavioral issues among students, linking them to intense academic pressure. This pressure is largely the result of a rigid curriculum and the high expectations imposed by both teachers and parents.

Numerous case studies across India reveal how this academic strain has led to serious psychological consequences for students, including psychosomatic disorders, depression, and, in extreme cases, running away from home or suicide.

For Indian students, academic pressure arises from four primary and interconnected sources: curriculum-related, school-related, parental, and internal pressures. The current curriculum is predominantly exam-oriented, which fosters rote learning and unhealthy competition, rather than encouraging critical thinking and creativity. In addition, schools often fail to accommodate individual learning differences, instead promoting uniformity and conformity. This approach limits students' freedom to express themselves and discourages independent thought, placing further strain on their development. Parental pressure also plays a significant role, as parents frequently set unrealistic academic expectations, driven by their aspirations for social mobility and professional success. As a result, children often internalize these external demands, creating a form of self-imposed stress and anxiety. This internal pressure, compounded by the others, can be particularly detrimental to a

International Journal of Environmental Sciences
ISSN: 2229-7359
Vol. 11 No. 21s, 2025
https://www.theaspd.com/ijes.php

Evaluating Various Methods for Solving Third-Order Ordinary Differential Equations

S. Joshna[1], Vinita Dewangan[2]
[1]Research Scholar, MATS University, Raipur and Assistant Professor, Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur.
[2]Professor, Department of Mathematics, MATS University, Raipur

Abstract: *Adomian decomposition and Laplace transform methods (ADM & LTM) each have established roles in the mathematical toolkit for differential equations. The ADM is known for its iterative approach, breaking down complex differential equations into simpler, more manageable parts, which is especially useful for nonlinear problems. On the other hand, the Laplace transform method simplifies linear ordinary differential equations (ODEs) with constant coefficients by converting them into algebraic equations, facilitating easier solutions through algebraic manipulation.*

Keywords: *Laplace Transform, Adomian decomposition, differential equations.*

INTRODUCTION

The ADM & LTM are two unique techniques employed for solving third-order ODEs. The Adomian decomposition method is an iterative technique that breaks down complex differential equations into simpler sub problems, making it particularly useful for nonlinear or challenging equations where direct solutions are difficult. Its main advantage is its flexibility and applicability to a wide range of equations, though it may require multiple iterations for convergence. Conversely, the LTM serves as a robust technique for solving linear differential equations with constant coefficients by converting them into algebraic equations within the Laplace domain.This method simplifies problem-solving by leveraging algebraic techniques, but its effectiveness is primarily confined to linear and constant-coefficient cases. Comparatively, the Laplace transform method is generally more straightforward for linear ODEs, while the Abomian decomposition method provides a more adaptable approach for a wider variety of equations, including nonlinear ones. The choice between these methods depends on the specific nature of the ODE and the desired solution approach.

1. THIRD ORDER ORDINARY DIFFERENTIAL EQUATION

$$r''' + m(x)r'' + n(x)r' + o(x)y = f(x) \qquad 0 \le x \le L \quad \text{.....(1)}$$

With Initial condition

$$r(0) = S, r'(0) = T, r''(0) = U \quad \text{.....(2)}$$

Where m(x), n(x), o(x) are continuous functions of x and S, T, and U are constants.

2. ADOMIAN DECOMPOSITION METHOD (ADM)

This method provides the solution in an Infinite series form. The obtained solution is in an infinite series form Converge to closed form solution. The exact solution exists.

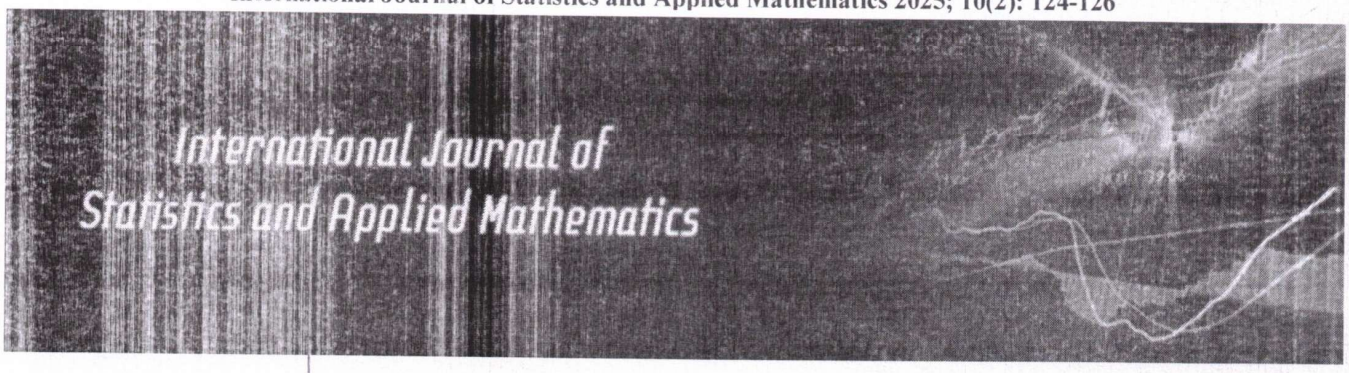
The ADM decomposes the unknown function say "n" Infinite number of components defined by the decomposition.

Unknown function

$$r(x) = \sum_{n=0}^{\infty} r_n(x)$$

$$r(x) = r_0(x) + r_1(x) + r_2(x) + r_3(x) + ...$$

International Journal of Statistics and Applied Mathematics 2025; 10(2): 124-126



ISSN: 2456-1452
Maths 2025; 10(2): 124-126
© 2025 Stats & Maths
https://www.mathsjournal.com
Received: 12-12-2024
Accepted: 19-01-2025

S Joshna
[1] Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur, Chhattisgarh, India
[2] MATS University, Raipur, Chhattisgarh, India

Vinita Dewangan
MATS University, Raipur, Chhattisgarh, India

SC Shrivastava
Rungta College of Engineering and Technology, Bhilai, Chhattisgarh, India

R Shrivastav
Government Naveen College, Risali, Durg, Chhattisgarh, India

Corresponding Author:
SC Shrivastava
Rungta College of Engineering

Applications of Laplace transform in third and fourth order differential equation

S Joshna, Vinita Dewangan, SC Shrivastava and R Shrivastava

Abstract
Differential equations are crucial for modelling real-world problems, across different fields, from engineering to physics to biology. The Laplace transform is a potent instrument that can be employed to solve several categories of differential equations. The Laplace transform is a useful method for solving third and fourth order differential equations. The objective of this research is to examine the DE and their solutions through the utilization of the Laplace transform. The paper commences with a concise introduction to differential equations and the Laplace transform. The paper provides systematic solutions to third and fourth order differential equations by utilizing the Laplace transform. Additionally, it includes illustrative examples to demonstrate the practical implementation of this technique.

Keywords: Laplace transform, third order, fourth order differential equation

Introduction
Differential equations are an essential tool for modelling real-world problems in various fields such as engineering, physics, and biology. The solutions to these equations can provide insights into how systems behave over time and can help predict future outcomes. However, solving differential equations can be challenging, especially for higher-order equations. The Laplace transform is a potent instrument that may be employed to solve a wide range of differential equations, encompassing those of third and fourth order. The Laplace transform is a mathematical operation that transforms a DE into an algebraic equation, simplifying the process of solving it. Laplace transform is widely used in engineering, physics, and other fields for its ability to transform complex differential equations into simpler algebraic equations.
The paper will present a comprehensive analysis of the distinctions between third and fourth order differential equations and their accompanying Laplace transforms. Additionally, it will offer systematic solutions to differential equations of third and fourth order by utilising the Laplace transform. Furthermore, it will provide practical examples to demonstrate the practicality of this method.
The proposed study will contribute to a better understanding of the differences between third and fourth order differential equations and their corresponding Laplace transforms. It will also provide a clear methodology for solving these types of equations using Laplace transform, which can be applied to real-world problems in various fields. This study will be useful for students and researchers who use differential equations as a modelling tool and want to learn how to use Laplace transform to solve them.

Example
Some related examples of third and fourth order differential equations that can be solved using Laplace transform:
Third-order differential equation: y''' + 2y'' - 3y' - 4y = 0
Using Laplace transform, the equation can be converted into an algebraic equation:

$$s^3Y(s) - s^2y(0) - sy'(0) - y''(0) + 2(s^2Y(s) - sy(0) - y'(0)) - 3(sY(s) - y(0)) - 4Y(s) = 0$$

Solving for Y(s) and taking the inverse Laplace transform yields the solution in the time

1

किरण बेदी: महिला सशक्तिकरण की मिसाल और आधारभूत स्तंभ

डॉ० अपराजिता जॉय नंदी

संपादिका, सहायक प्राध्यापक (हिंदी), श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज रायपुर (छ.ग.)

सार: महिला सशक्तिकरण की दिशा में किरण बेदी का योगदान एक प्रेरणादायक उदाहरण है, जो यह दिखाता है कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में अपनी पहचान बना सकती हैं और समाज की मुख्यधारा में बराबरी के साथ कदम रख सकती हैं। किरण बेदी ने अपनी निष्ठा, साहस और समर्पण से न केवल महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में अपना स्थान बनाया, बल्कि उन्होंने यह भी साबित किया कि महिलाएं किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए सक्षम हैं। उन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से महिलाओं को न केवल समाज में सम्मान दिलाने का काम किया, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनने की दिशा में भी प्रेरित किया। उनके सुधारवादी दृष्टिकोण, साहस और सामाजिक कार्यों ने महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया है। उनकी यह यात्रा महिलाओं को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करने और उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक महान प्रेरणा है।

मुख्य शब्द: किरण बेदी, महिला सशक्तिकरण, महिला आईपीएस अधिकारी, तिहाड़ जेल।

8

'विश्वनाथ प्रताप सिंह': राजा मांडू से जननेता बनने तक का सफरनामा

डॉ० अपराजिता जॉय नंदी

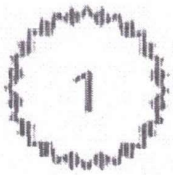
सहायक प्राध्यापक (हिंदी), श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सार :-

कहा जाता है कि मानव चेतना को विवादित लोगो के व्यक्तित्व से रौशनी मिलती है। विवादित व्यक्तित्व समाज और राष्ट्र के चेतना पर ऐसा गहरा असर छोड़ते है कि लोग सदियों तक उस व्यक्तित्व कों याद रखते है। 15 अगस्त 1990 को भारत का एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने अपने भाषण में यह कहा कि, 'अगर सत्ता और सरकार तलवार है तो ये तलवार गरीबों की तरफ से उठेगी, उनको न्याय दिलवाने के लिए उठेगी। ये पूंजी और सत्ता के गठबंधन की व्यवस्था में जो मौजूद व्यवस्था है उसमें गरीब का स्थान कहा है? और ये आज की बात नहीं है, ये लड़ाई हजारों-हजारों वर्ष की है, इसमें हम ये पूछना चाहते है कि क्या इस व्यवस्था में हम गरीबों को कोई स्थान दे सकते है?' यह ओजस्वी भाषण किसी और की नहीं बल्कि उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद (अब प्रयागराज) जिले के राजघराने में शाही ठाट-बाट के बीच पले-बढ़े विश्वनाथ प्रताप सिंह (वी.पी. सिंह) की हैद्य जिसने भारतीय राजनीति को एक नया मोढ़

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner



भारतीय दलित महिला लेखिकाओं का साहित्यिक योगदान

डॉ अपराजिता जॉय नंदी

सहायक प्राध्यापक (हिंदी), श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीस, रायपुर (छ.ग.)

सार :

भारतीय दलित महिला लेखिकाओं का साहित्यिक योगदान भारतीय साहित्य में एक सशक्त और जरूरी हस्तक्षेप के रूप में उभरकर सामने आया है। दलित महिलाएं समाज में दोहरे शोषण की शिकार रही हैं - एक ओर जातिगत भेदभाव और दूसरी ओर पितृसत्ता का अत्याचार। इनके साहित्य में यह दर्द, संघर्ष और प्रतिरोध प्रमुखता से दर्ज है। दलित महिला लेखिकाओं ने अपने अनुभवों को आत्मकथाओं, कहानियों, कविताओं और निबंधों के माध्यम से व्यक्त किया। उन्होंने अपनी आवाज को न केवल साहित्य का हिस्सा बनाया, बल्कि सामाजिक बदलाव का माध्यम भी बनाया। इनके लेखन में जातिगत शोषण, लैंगिक उत्पीड़न, गरीबी, शिक्षा से वंचित रहना और सामाजिक असमानता के मुद्दे मुखर रूप से दिखाई देते हैं। दलित महिला लेखिकाओं ने ब्राह्मणवादी स्त्रीवाद से अलग अपनी विशिष्ट दलित स्त्रीवादी दृष्टि विकसित की, जिसमें वे जाति और लिंग दोनों के शोषण को एक साथ रेखांकित करती हैं। सुशीला टाकभौरे, रजनी तिलक, अनीता भारती, कौशल्या बैसंत्री, शांताबाई

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scann

1

भारतीय प्रशासन में महिलाओं की भागीदारी: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

डॉ० अपराजिता जॉय नंदी

सहायक प्राध्यापक (हिंदी), श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सार :

भारतीय प्रशासन में महिलाओं की भागीदारी का इतिहास भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति, सामाजिक चेतना, शिक्षा और संवैधानिक विकास के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। यह यात्रा प्राचीन भारत की कुछ अपवादस्वरूप महिलाओं जैसे गर्गी, मैत्रेयी और अशोक की पुत्री संघमित्रा से शुरू होती है, जिन्होंने सीमित रूप में प्रशासनिक या कूटनीतिक भूमिकाएँ निभाई। मध्यकालीन भारत में यह भागीदारी धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों के कारण और अधिक संकुचित हो गई, हालांकि रजिया सुल्तान और चाँद बीबी जैसी शासिकाओं ने अपवाद स्वरूप कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए। औपनिवेशिक काल में सामाजिक सुधार आंदोलनों, जैसे राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और महात्मा गांधी के प्रयासों ने महिलाओं में सामाजिक और राजनीतिक चेतना को जागृत किया। स्त्री शिक्षा को बढ़ावा मिला और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी उल्लेखनीय रही। स्वतंत्र भारत में संविधान द्वारा महिलाओं को समान

Scanned with OKEN Scanr

Scanned with

अध्याय 2.

"दलित साहित्य और विमर्श: अस्मिता, समानता और न्याय की खोज"

डॉ. अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज रायपुर, (छ. ग.)

सारांश :

दलित विमर्श हिंदी साहित्य में एक सशक्त सामाजिक-सांस्कृतिक और वैचारिक आंदोलन के रूप में उभरा है, जो वंचितों, शोषितों और दमित वर्गों की आवाज़ बनकर उनके अनुभवों, पीड़ा, संघर्ष और अस्मिता को शब्दों में ढालता है। दलित साहित्य और विमर्श की उस वैचारिक एवं रचनात्मक परंपरा का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसने हिंदी साहित्य को सामाजिक न्याय, समानता और अस्मिता की नई दृष्टि दी है। दलित साहित्य केवल साहित्यिक प्रवृत्ति नहीं, बल्कि एक सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन है, जो सदियों से शोषित, वंचित और बहिष्कृत समुदायों की आवाज़ को केंद्र में लाता है। यह विमर्श परंपरागत ब्राह्मणवादी संरचनाओं, जातिगत असमानता और धार्मिक पाखंड के विरुद्ध प्रतिरोध का माध्यम है और इसमें अनुभव की प्रामाणिकता और प्रतिरोध की चेतना साहित्यिक सौंदर्य से अधिक महत्व रखती है। हिंदी साहित्य में दलित विमर्श तब प्रभावी हुआ जब दलित लेखक स्वयं अपने व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभवों को साहित्य में प्रस्तुत करने लगे। ओमप्रकाश वाल्मीकि की "जूठन", श्योराज सिंह बेचैन की "मेरा बचपन मेरे कंधों पर", कंवल भारती, कौशल्या बैसंत्री आदि की रचनाएँ न केवल पीड़ा और उत्पीड़न को उजागर करती हैं, बल्कि आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और मानवाधिकार की पुनर्स्थापना की मांग भी करती हैं।

अध्याय 11

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, प्रभाव और भारत की शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता"

डॉ. अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज
रायपुर (छ.ग.)

सारांश :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 भारत में शिक्षा सुधार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुआ। यह नीति स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के आधुनिकीकरण और सर्वसुलभ बनाने के उद्देश्य से विकसित की गई थी। इसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह नीति उस समय की सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई थी, जब भारत तेजी से औद्योगिकीकरण और सामाजिक विकास की ओर बढ़ रहा था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 ने शिक्षा के स्तरों को व्यवस्थित करने, तकनीकी शिक्षा पर बल देने, मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने और विज्ञान व प्रौद्योगिकी शिक्षा को बढ़ावा देने जैसी महत्वपूर्ण सिफारिशें कीं। इसके प्रभाव के रूप में देश में शिक्षण पद्धतियों में सुधार, पाठ्यक्रमों का आधुनिकीकरण और शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार हुआ। इसके साथ ही नीति ने शिक्षा को सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के साधन के रूप में मान्यता दी। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। यह नीति शिक्षा में गुणवत्ता, समान अवसर और तकनीकी दक्षता की नींव रखती है। जबकि समय के साथ नई नीतियाँ और सुधार आए हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 ने शिक्षा में व्यापक दृष्टिकोण और दीर्घकालिक योजना का मार्गदर्शन प्रदान किया, जो आज के परिप्रेक्ष्य में भी शिक्षण-संबंधी नीतियों के लिए प्रेरणादायक है।

मुख्य शब्द :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, शिक्षा नीति, त्रिभाषा सूत्र, अनुच्छेद 45, राधाकृष्णन आयोग, कोठारी आयोग।

2. हिंदी दलित साहित्य में स्त्री केन्द्रित लेखन और आत्मनिर्भरता

डॉ. अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज
रायपुर (छ.ग.)

---

1. सार:

हिंदी दलित साहित्य ने भारतीय समाज की जातिगत और वर्गीय विषमताओं को साहित्य के केंद्र में लाकर एक नई परंपरा स्थापित की है। इस धारा में स्त्री केन्द्रित लेखन विशेष महत्व रखता है क्योंकि दलित स्त्री को जाति और लिंग- दोनों स्तरों पर शोषण का सामना करना पड़ा है। सदियों तक हाशिए पर रही दलित स्त्रियों ने जब स्वयं अपनी पीड़ा, संघर्ष और आकांक्षाओं को लिखना शुरू किया, तो साहित्य में एक नया और प्रामाणिक स्वर उभरा। कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' और सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द' जैसी आत्मकथाओं ने दलित स्त्री जीवन की कठोर सच्चाइयों को अभिव्यक्ति दी। अनीता भारती, बबीता राही और संगीता दास जैसी लेखिकाओं ने कविताओं और आलोचनात्मक लेखन के माध्यम से स्त्री अस्मिता, प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता को स्वर प्रदान किया। इन रचनाओं की विशेषता यह है कि ये केवल पीड़ा का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता की ओर भी प्रेरित करती हैं। समकालीन दौर में दलित स्त्री लेखन शिक्षा, श्रम और सामाजिक चेतना को आत्मनिर्भरता का आधार मानते हुए बदलते समाज का सशक्त दस्तावेज़ प्रस्तुत कर रहा है। डिजिटल माध्यमों और वैश्विक विमर्श से जुड़कर यह साहित्य विश्व स्तर पर भी अपनी पहचान बना रहा है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिंदी दलित साहित्य में स्त्री केन्द्रित लेखन केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन,

1

प्रवासी भारतीय महिला लेखन: हिंदी भाषा का वैश्विक विस्तार

डॉ० अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक, रायपुर, छत्तीसगढ़

सार :

हिंदी भाषा का वैश्विक प्रसार केवल सरकारी या अकादमिक पहलों से नहीं हुआ, बल्कि प्रवासी भारतीय समुदाय की सांस्कृतिक सक्रियता ने भी इसमें केंद्रीय भूमिका निभाई। विशेष रूप से प्रवासी भारतीय महिला लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी को विश्वपटल पर पहुँचाया। उनका लेखन केवल भाषा को बचाने का माध्यम नहीं, बल्कि अपनी पहचान, स्मृति और संस्कृति को सहेजने का एक जीवंत प्रमाण है। हिंदी भाषा केवल भारत तक सीमित नहीं रही। उपनिवेशवाद, व्यापार, शिक्षा, नौकरी और आप्रवासन की ऐतिहासिक लहरों के साथ यह दुनिया के हर कोने में पहुँची। प्रवासी भारतीय समुदायों ने न केवल अपनी सांस्कृतिक जड़ों को बचाए रखा, बल्कि हिंदी भाषा के वैश्विक प्रसार में भी योगदान दिया। इस वैश्विक प्रसार में प्रवासी भारतीय महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वे केवल भाषा की संवाहक नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने अपने अनुभवों, संघर्षों, भावनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को साहित्य के माध्यम से नई पीढ़ियों तक पहुँचाया। प्रवासी महिला लेखिकाओं ने हिंदी कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध और

अध्याय - 2

रमन का विज्ञान-दर्शन

डॉ. अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज
रायपुर (छ.ग.)

सारांश

सी. वी. रमन का विज्ञानदर्शन- एक ऐसे विचारशील वैज्ञानिक का दर्शन था, जो ज्ञान को केवल पुस्तकीय नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव, निरीक्षण और प्रयोग की प्रक्रिया से अर्जित मानता था। उनका मानना था कि विज्ञान केवल तथ्यों का संग्रह नहीं, बल्कि प्रकृति की भाषा को समझने का माध्यम है। रमन का दृष्टिकोण पूर्णतः स्वदेशी, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर था। वे पश्चिमी प्रयोगशालाओं की नकल करने में विश्वास नहीं रखते थे, बल्कि भारतीय संदर्भ में उपलब्ध सीमित संसाधनों में ही शोध और अनुसंधान को संभव बनाने की वकालत करते थे। उन्होंने इस विचार को अपने जीवन और कार्य में पूरी निष्ठा से अपनाया — जैसे कि रमन प्रभाव की खोज बेहद साधारण उपकरणों से करना। रमन विज्ञान को केवल करियर नहीं, बल्कि एक मानसिक अनुशासन और आत्मिक संतुलन का साधन मानते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि वैज्ञानिक में प्रबल जिज्ञासा, ईमानदारी और स्वावलंबन है, तो वह किसी भी सीमा को पार कर सकता है। उन्होंने कई बार यह भी कहा कि **"सच्चा विज्ञान तभी पनपता है, जब प्रयोगशाला में श्रद्धा, स्वाभिमान और सादगी का वातावरण हो।** "रमन यह भी मानते थे कि विज्ञान और संस्कृति विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। उन्होंने भारतीय संगीत, हीरे, समुद्र के रंग जैसे सांस्कृतिक और प्राकृतिक विषयों पर वैज्ञानिक अध्ययन कर यह

2. "स्वामी विवेकानंदः- एक युग द्दष्टा एवं भारत के नवजागरण के अग्रदूत"

डॉ. अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
श्री०शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज रायपुर, (छ.ग.)

भूमिका:- स्वामी विवेकानंद भारत के उन अप्रतिम महापुरुषों में से एक हैं, जिन्होंने भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और दर्शन को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दिलाई। वे केवल एक संत या सन्यासी नहीं थे, बल्कि एक द्रष्टा, विचारक, समाज सुधारक, राष्ट्रनिर्माता और प्रेरणादायक नेता थे। उन्होंने भारत की उस आत्मा को जाग्रत किया, जो औपनिवेशिक शासन, सामाजिक कुरीतियों और मानसिक दासता के बोझ से दब चुकी थी। 19वीं शताब्दी का भारत राजनीतिक रूप से ब्रिटिश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। सामाजिक रूप से जाति-पांति, छुआछूत, अंधविश्वास और स्त्री-वंचना जैसी समस्याओं ने भारतीय समाज को जकड़ रखा था। धार्मिक जीवन में पाखंड और रूढ़ियों का बोलबाला था। ऐसे विकट समय में जब देशवासियों का आत्मविश्वास डगमगाने लगा था और विदेशी संस्कृति के सामने भारतीय सभ्यता हीन मानी जा रही थी, स्वामी विवेकानंद ने भारतीय जनमानस को अपने गौरवशाली अतीत

1

देवानंदः एवरग्रीन सुपरस्टार की अनूठी पहचान



डॉ० अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी), श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर (छ.ग.)

परिचय

भारतीय सिनेमा के इतिहास में कुछ नाम ऐसे होते हैं जो सिर्फ एक दौर तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उनकी चमक हर पीढ़ी के दर्शकों को आकर्षित करती है। देवानंद ऐसे ही एक सितारे थे, जिनकी ऊर्जा, आकर्षण और स्टाइल ने उन्हें 'एवरग्रीन सुपरस्टार' बना दिया। उनकी अनोखी संवाद अदायगी, बेहतरीन अभिनय और अमिट रोमांटिक छवि ने हिंदी सिनेमा को एक नया आयाम दिया। देवानंद न सिर्फ एक प्रतिभाशाली अभिनेता थे, बल्कि एक साहसी निर्माता और निर्देशक भी थे, जिन्होंने अपनी फिल्मों के जरिए समाज को नई सोच दी। उनकी फिल्में रोमांस, समाज सुधार और आत्म-खोज जैसे गहरे विषयों पर आधारित थीं, जो आज भी दर्शकों को प्रेरित करती हैं। 'गाइड', 'हरे राम हरे कृष्णा', 'कालापानी', और 'हम दो' जैसी कालजयी फिल्मों में उनकी प्रतिभा की झलक देखने को मिलती है। देवानंद का फैशन और स्टाइल भी किसी ट्रेंडसेटर से कम नहीं था। उनका हाफ-कॉलर शर्ट

39

'सुचित्रा सेन' के अभिनय जीवन का विविध आयाम

डॉ० अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी), श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सार

भारतीय सिनेमा के स्वर्ण युग की चर्चा करते समय, 'सुचित्रा सेन' का नाम अनायास ही एक अद्वितीय प्रकाशस्तंभ के रूप में उभरता है। उनके अभिनय में गहराई, शालीनता और प्रभावशीलता का ऐसा अद्भुत सम्मिश्रण था, जिसने उन्हें बंगाली और हिंदी सिनेमा की महानतम अभिनेत्रियों में स्थापित किया। 'सुचित्रा सेन' केवल एक अदाकारा नहीं थीं, बल्कि वे भारतीय फिल्म जगत में स्त्री सशक्तिकरण, गरिमा और समर्पण की प्रतीक भी थीं। उनका अभिनय जीवन विविध आयामों से परिपूर्ण था। चाहे वह रोमांटिक किरदारों में कोमलता और भावनात्मक गहराई हो, सामाजिक विषयों पर आधारित फिल्मों में उनकी दृढ़ता और आत्मबल, या फिर आध्यात्मिक व आंतरिक संघर्ष को चित्रित करने वाली भूमिकाएँ, हर चरित्र में 'सुचित्रा सेन' ने अपनी छवि अमिट बना दी। विशेषकर उत्तम कुमार के साथ उनकी जोड़ी ने बंगाली सिनेमा को ऐसी कालजयी फिल्में दीं, जो आज भी दर्शकों के दिलों में गूंजती हैं। हिंदी सिनेमा में भी उन्होंने अपनी छाप छोड़ी, विशेषकर 'आंधी' जैसी फिल्मों के

Commerce and Economic Thought in Indian Tradition: Trade, Finance, and Sustainable Livelihoods

Dr. Rajshree Sharma and Mr. Duna Jogeswar Rao
Asst. Professor, Bhilai Mahila Mahavidyalaya, Bhilai,
Asst. Professor, Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur,
sharmarajshree71@gmail.com, jogeswarph.d2022@gmail.com

Abstract:

This chapter delves into the rich and enduring traditions of commerce and economic thought in India, showing how trade, finance, and livelihoods were always intertwined with ethics, culture, and sustainability. It highlights how guiding principles from the *Vedas*, *Dharmashastras*, and Kautilya's *Arthashastra* shaped economic activity, emphasizing that wealth creation was never separate from social responsibility and moral conduct. The chapter also explores India's sophisticated trade networks, indigenous banking practices like *hundis*, and the *bahi-khata* accounting system, demonstrating how commerce was practical, trustworthy, and deeply rooted in community values. In addition, it examines sustainable livelihood practices, from agriculture and artisanal crafts to water and resource management, showing that Indian economic wisdom always balanced human needs with ecological and social well-being. By weaving together these insights, the chapter argues that India's traditional knowledge systems offer lessons for today—reminding us that economic growth, ethical practice, and sustainability can coexist in a harmonious and lasting way.

Keywords: Indian economic thought, commerce, Indigenous banking, Bahi-khata accounting, Trade networks, Sustainable livelihoods, Traditional knowledge systems

Introduction

The history of commerce and economic thought in India is a tapestry woven with threads of philosophy, culture, and practical ingenuity. Unlike the often compartmentalized study of economics in modern academia, Indian traditions viewed commerce not simply as a means of wealth generation but as a deeply moral, spiritual, and social activity. The Indian knowledge system has always treated economic life as part of a holistic worldview in which livelihood, trade, ethics, community, and sustainability were interconnected.

Over centuries, India developed an array of economic practices that not only sustained its own complex society but also connected it with civilizations across Asia, Africa, and Europe. From the ancient period to the colonial encounter, Indian traders, artisans, and thinkers devised sophisticated systems of production, distribution, and record-keeping that combined pragmatism with ethical ideals. The rich traditions of *dharma* (duty), *artha* (wealth), and *karma* (action) shaped how individuals and communities engaged with commerce, ensuring that the pursuit of prosperity was aligned with justice, sustainability, and spiritual values.

This chapter seeks to explore key dimensions of commerce and economic thought in the Indian tradition. It focuses on the guiding principles that informed trade and

IOT Academy Publishers

MSME Registration No: UDYAM-TN-03-01015425
Regt, No. : FR/CBE/709/2021
Coimbatore, Tamilnadu, India
www.iotacademy.in

PUBLICATION CERTIFICATE

This is to certify that

Ms. Onkar Kaur Bhamra

Assistant Professor, Department of Management

Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur

has published a chapter

THE ROLE OF ARTIFICIAL INTELLIGENCE AND DATA DRIVEN DECISION MAKING

in the Book

AI: Applications and Tools

With ISBN : 978-93-48990-74-7 published in August, 2025

Mrs. R. Sridevi
Managing Editor

Mrs. Anisha
Chief Editor

Mrs. Jayalakshmi
Director, T & D

Chapter – 29

THE ROLE OF ARTIFICIAL INTELLIGENCE AND DATA DRIVEN DECISION MAKING

Ms. Onkar kaur Bhamra[*1] **and Dr. Manoj Sharma**[*2]
[*1] Assistant Professor, Department of Management,
[*2] Professor, Department of Commerce,
Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur.

Abstract:

The integration of Artificial Intelligence (AI) into decision-making processes is transforming the way organizations operate across various industries. This research explores the role of AI in enhancing decision-making quality, efficiency, and accuracy. By employing a mixed-methods approach, the study examines both the benefits and challenges associated with AI-driven decision-making.

Primary data will be collected through interviews and surveys with industry professionals and AI experts, while secondary data will be sourced from existing literature and case studies. The findings are expected to highlight significant improvements in data analysis capabilities and decision-making speed due to AI, alongside identifying key challenges such as data privacy concerns, ethical considerations, and the dependency on high-quality data and computational resources.

Additionally, the research will offer practical recommendations for organizations aiming to integrate AI into their decision-making processes effectively. These best practices will address both technical and ethical aspects, ensuring a balanced approach to AI implementation.

The study aims to provide valuable insights for business leaders, policymakers, and academics, contributing to a deeper understanding of AI's impact on modern decision-making and offering guidance on navigating the complexities of AI integration.

1. Introduction:

The rapid advancement of Artificial Intelligence (AI) is fundamentally reshaping the way organizations make decisions. Technologies such as machine learning, deep learning, natural language processing, and data analytics are becoming essential tools in modern business environments. These innovations empower organizations to process large volumes of data, derive meaningful insights, and make decisions with greater speed, accuracy, and efficiency than traditional methods.

Chapter-10

A study on consumer behaviour of Indians towards Apple iPhones in India

Dr. Abhinav Shrivastava

ABSTRACT

This study explores consumer behavior towards iPhones in India, focusing on the motivations, preferences, and purchase decision processes of Indian smartphone buyers. With Apple's growing presence in the Indian market, iPhones have transitioned from being premium status symbols to preferred choices among diverse consumer segments. The research examines key factors influencing purchase intentions, including brand perception, design and performance features, price sensitivity, social influence, and after-sales service. Through a mixed-methods approach combining surveys and interviews with Indian consumers across urban and semi-urban areas, the findings reveal that brand loyalty, aspirational value, and ecosystem integration significantly drive iPhone purchases, while high price points and perceived value for money remain concerns for many

Assistant Professor, SSIPS, Raipur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

IOT Academy Publishers

MSME Registration No: UDYAM-TN-03-01015425
Regt. No. : FR/CBE/709/2021
Coimbatore, Tamilnadu, India
www.iotacademy.in

PUBLICATION CERTIFICATE

This is to certify that

Ms. Sumera

Assistant Professor, Department of Commerce

Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur

has published a chapter

SMART TECHNOLOGIES FOR SMARTER WOMEN INVESTORS:
AI AND CAPITAL MARKET INCLUSION

in the Book

AI: Applications and Tools

With ISBN : 978-93-48990-74-7 published in August, 2025

Mrs. R. Sridevi	Mrs. Anisha	Mrs. Jayalakshmi
Managing Editor	Chief Editor	Director, T & D

Chapter – 27

SMART TECHNOLOGIES FOR SMARTER WOMEN INVESTORS: AI AND CAPITAL MARKET INCLUSION

Ms. Sumera*1, Dr. Manoj Sharma*2 and Ms. Kamna Aswathi*3

*1 & *3 Assistant Professor, *2 Professor, Department of Commerce,
Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur.

Introduction

In an era where digital transformation is reshaping industries, artificial intelligence (AI) has emerged as a powerful catalyst for change in financial inclusion. Traditionally, capital markets have been perceived as complex and intimidating, particularly for women, who often face social, educational, and economic barriers to entry. However, with the rise of AI-powered financial tools and platforms, there is an unprecedented opportunity to bridge this gap. Smart technologies are now enabling women to access financial literacy resources, receive personalised investment advice, and make informed decisions in real time. This chapter explores how AI can revolutionise women's engagement in capital markets by reducing entry barriers, fostering confidence, and supporting inclusive economic growth. Through real-world examples, data insights, and an examination of AI's role in democratising finance, this chapter makes a case for technology-enabled empowerment of women in the investment landscape.

The Gender Gap in Capital Market Participation

Research consistently shows that women continue to be underrepresented in investment portfolios relative to men. The Global Gender Gap Report highlights persistent inequalities in financial inclusion, with cultural biases and traditional gender roles often inhibiting women's participation in investing. However, as digital literacy increases among women, alongside the growing accessibility of financial tools powered by AI, there is a unique opportunity to bridge this gap. A report by the OECD (2020) shows that globally, only 26% of women own investments compared to 44% of men. In India, SEBI (2022) reports that women comprise just 18% of demat account holders. This disparity is not due to a lack of interest but stems from multiple structural and cultural barriers.

Region	% of Women Investors	% of Men Investors
Global Avg.	26%	44%

CHAPTER : 20

THE ROLE OF EMOTIONAL INTELLIGENCE IN LEADERSHIP EFFECTIVENESS

Kamna Awasthi [1]

ISBN: 978-93-5809-194-6 | DOI: 10.25215/9358091940.20

Abstract

Leadership effectiveness in contemporary organizations is increasingly recognized as extending beyond technical skills and cognitive intelligence, with emotional intelligence (EI) emerging as a pivotal determinant of successful leadership. This review paper critically examines the role of emotional intelligence in enhancing leadership effectiveness by synthesizing evidence from peer-reviewed studies, theoretical frameworks, and empirical research across diverse organizational contexts. Findings suggest that EI competencies—including self-awareness, self-regulation, empathy, motivation, and social skills—significantly influence leaders' ability to inspire, motivate, and manage teams effectively. Emotional intelligence is shown to foster trust, improve communication, and strengthen conflict resolution, thereby contributing to organizational performance and employee satisfaction. Moreover, the review highlights the moderating role of cultural, contextual, and organizational factors in shaping the effectiveness of EI-driven leadership practices. Gaps remain in longitudinal and cross-cultural analyses, underscoring the need for further research that integrates EI training interventions and leadership development programs. The study concludes that emotional intelligence is not merely an ancillary leadership attribute but a core competency for sustaining organizational resilience and long-term success in increasingly complex and competitive environments.

Keywords: Emotional Intelligence, Leadership Effectiveness, Organizational Performance, Self-Awareness, Empathy, Leadership Development

Introduction

The discourse on leadership effectiveness has undergone significant transformation over the past few decades, shifting from a narrow focus on cognitive capabilities and technical expertise toward a more holistic understanding of the human dimensions of leadership. In contemporary organizations characterized by globalization, workforce diversity, rapid technological change, and heightened competition, leaders are increasingly required to demonstrate competencies that extend beyond traditional measures of intelligence. Emotional intelligence (EI), defined as the capacity to perceive, understand, manage, and regulate emotions in oneself and others, has emerged as a critical determinant of leadership effectiveness in this evolving context (Goleman, 1998).

Scholars and practitioners alike recognize that leadership effectiveness is not solely dependent on rational decision-making or task-oriented strategies, but also on the leader's ability to inspire, motivate, and cultivate positive interpersonal relationships within teams. Emotional intelligence plays a pivotal role in enabling leaders to navigate complex social interactions, foster trust, resolve conflicts, and build cohesive organizational cultures. Research has shown that leaders with high emotional intelligence are better equipped to manage stress, adapt to uncertainty, and engage in empathetic communication—factors that directly influence employee performance, satisfaction, and organizational resilience (Mayer, Salovey, & Caruso, 2004).

Despite the growing attention to EI, gaps remain in the literature regarding its contextual application across industries, cultures, and leadership models. While some studies affirm the strong correlation

[1] Assistant Professor (Management Department) Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur

IOT Academy Publishers

MSME Registration No: UDYAM-TN-03-01015425
Regt. No. : FR/CBE/709/2021
Coimbatore, Tamilnadu, India
www.iotacademy.in

PUBLICATION CERTIFICATE

This is to certify that

Ms. Jalpa Soni

Assistant Professor, Department of Commerce

Shri Shankaracharya Institute of Professional Studies, Raipur

has published a chapter

REVOLUTION OF AI IN MODERN COMMERCE

in the Book

Modern Approaches to Commerce, Finance and Management

With ISBN : 978-93-48990-94-5 published in August, 2025

Mrs. R. Sridevi	Mrs. Anishu	Mrs. Jayalakshmi
Managing Editor	Chief Editor	Director, T & D